IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

मानव जीवन के विकास में पर्यावरण का महत्व

मधुलता कुशवाहा
शोधार्थी भूगोल
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर. के. शर्मा
प्रभारी प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, रामनगर
जिलासतना (म.प्र.)

सार

पृथ्वी के धरातल पर मानव की जन्म प्राकृति के अद्भुत देन है मानव के बुध्दि का प्रकत्प, विकल्प , व्यक्तित्व और कृतित्व से अन्य जीवन जगत से विशिष्ट एवं प्रथक बना देता हैअधोलिखित विशेषताओं के कारण ही मानव अपनी प्राथमिक अवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिंतन शील होकर पर्यावरण से अन्तर्सम्बंध स्थापित करने लगा मानव ने निश्चित पर्यावरण में रहकर बुध्दिबल और कार्यो द्वारा एक विशिष्ट संस्कृति का निर्माण किया , साथ ही प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए सामाजिक मूल्यो और आदर्शो को भी स्थापित किया। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भोजन, वस्त्र, आश्रय से लकर व्यवसाय , कार्यक्षमता, स्वास्थ्य ,ज्ञान-विज्ञान , भाषा, संस्कृति धर्म आदि के निर्धारण में पर्यावरणीय तथ्यो की महत्वपूर्ण रहती है। मानव अन्य जीवो की तरह अपने आपको प्राकृतिक पर्यावरण के अनुरूप बनाने के लिए अनुकूल रूपान्तरण एवं समायोजन करता रहता है। किसी भी प्रदेश में पर्यावरण एवं मानव केमाध्य संबंधो को वहा के जनसंख्या वितरण के द्वारा समझने में अनुकूलता रहती है मनुष्य किसी भी भौगोलिक प्रदेश में पर्यावरणीय तत्वो का जितना अधिक अनुकूलतम प्रयोग करने में समर्थ है वहा के आर्थिक संसाधन उतनी ही अधिक ससक्ता और जनसंख्या बसाव भी उतना अधिक होगा। जैस यूरोप देश एशिया देश आदि । इसके विपरीत प्रौद्योगिकी के पिछडेपन और आज्ञानता के कारण किसी भौगोलिक इकाई मे मानव स्थानीय संसाधनो का विदोहन एंव आर्थिक उपयोग नही कर पाया वे क्षेत्र आर्थिक रूप से सशक्त नही हो पाये और जनसंख्या बसाव भी कम देखने को मिलेगा जैसे दक्षिण अमेरिका का अमेजन बेसिन, विषुवत रेखीय वर्षा वनो के क्षेत्र , मध्य अफ्रीका कांगो बेसिन आदि।

शब्दकोश :- बुध्दि का प्रकल्प, संस्कृति, अनुकूलन, रूपांतरण, समायोजन, जनसंख्या, वितरण, प्रौद्योगिकी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

प्रस्तावना

मानव जीवन पर पर्यावरण प्रभाव

सम्पूर्ण जीव-जगत में प्रत्येक जीवो की उत्पत्ति का कारण प्रकृति ही है। चाहे वह छोटे से छोटे एक कोशिकीय जीव हो या बुध्दिशाली मानव। मनुष्य का संपूर्ण जीवन जब वह गर्भ में पल रहा होता है तब से लेकर मृत्यु पर्यंत प्रकृति पर ही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर रहता है। प्राकृतिक पर्यावरण में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो प्रकार के तत्व विद्यमान है, साथ ही मनुष्य के अंदर भ्झी सकारात्मक और नकारात्मक दोनो प्रकार के विचार पाए जाते है। मानव और प्रकृति दोनो एक-दूसरे पर अलग-अलग और सामूहिक रूप से अपना अपना प्रभाव डालते है। उसके परिणाम स्वरूप ही उस क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगो का सामजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का निर्माण होता है। प्रकृति एवं पर्यावरण दोनो सकारात्मक और नकारात्मक दोनो प्रकार के अलग-अलग प्रभाव डालते है। इस शोध में प्राकृतिक पर्यावरण में संपूर्ण नैसर्गिक कारको के द्वारा मनुष्य जीवन को प्रभावित करने वाले सामान्य प्रभावो की विवेचना करने का प्रयास किया गया है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख तत्वो में जल, वायु, मृदा, जलापूर्ति, प्राकृतिक वनस्पति आदि को, सम्मिलित करते हुए अध्ययन किया गया है।

जलवायु का प्रभाव

पुरातन काल से जिन क्षेत्रो की जलवायु अनुकूल थी, मानव सभ्यताओ का विकास भी उन्ही क्षेत्रो में संभव हो सका , जैसे- भारत के पश्चिमोत्तर भाग में सिंधु सभ्यता, चीन में मेसोपोटामिया और वांग्हो की सभ्यता, मिस्त्र की सभ्यता आदि और वर्तमान युग में भी विश्व के सर्वाधिक विकसित देश, अनुकूल जलवायु के शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, जहां जलवायु स्वास्थ्यवर्धक एवं सर्वोत्तम कार्य क्षमता वाली है वही उद्भव हुए है, जैस यूरोपीय देश (फ्रांस, जर्मनी, यूक्रेन,रूस , नीदरलैंड आदि) कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड आदि।

जलवायु के प्रमुख तत्वो मे सूर्य प्रकाश, तापमान, वर्षा, आर्द्रता, प्रचलित हवाएं आदि को सम्मिलित किया जाता है। ये सभी तत्व पृथक-पृथक और सामूहिक रूप से मानव जीवन को प्रभावित करते है। जलवायु का प्रभाव मानव विकास रहन-सहन, खानपान, शारीरिक बनावट, रूप-रंग, वस्त्र, स्वास्थ्य, कार्यक्षमता, व्यवसाय , क्रियाशीलता और अन्य गतिविधियों पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है। जैसे ऊष्ण प्रदेश मे रहने वाले व्यक्तियों का रंग, उच्च तापमान के कारण काला होगा, जबकि शीत और शीतोष्णकटिबंध में गोरे

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

रंग के व्यक्ति मिलेगे। जिन प्रदेशो की जलवायु अनुकूल पाई जाती है, उन प्रदेशो में जनसंख्या, घनत्व, अन्य प्रतिकूल जलवायु के क्षेत्रो से निश्चित रूप से अधिक ही होगा।

अत्यधिक आर्द्रता एवं अत्यधिक उष्णता दोनो ही मानव बसाव एवं कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है, जैसे अति उष्णार्द्र जलवायु वाले भूमध्य रेखीय वर्षावन और शुष्क मरूस्थल दोनो ही निर्जन क्षेत्र है। तापमान एवं वृष्टि के बदलाव के अनुसार ही गृह निर्माण सामग्री , दीवारो की मोटाई, छतो की ढाल आदि में अंतर देखने को मिलता है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रो में अधिक ढाल, जबकि कम वर्षा वाले क्षेत्रो में मकान की कम ढाल मिलती है। जलवायु के द्वारा विभिन्न प्रकार के उद्योग भी प्रभावित होते है। जैसे-ऊनी वस्त्र उद्योग अधिकांशत: शीतोष्ण प्रदेशो मे ही विकसित होते है, जबकि सूती वस्त्र उद्योग का विकास उष्ण एवं शीतोष्ण दोनो प्रकार के प्रदेशो में देखने को मिलता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय , अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं यातायात भी जलवायु से प्रभावित होते है। शीत प्रदेशो में ठण्ड के कारण सड़के व दर्रे वर्ष से ढक जाते है, जिससे यातायात अवरूध्द हो जाता है। जबकि उपोष्ण एवं शीतोष्ण में सड़क, रेतएवं हवाई यातायात सुविधाजनक रहता है।

मृदा का प्रभाव

मृदा और मानव गतिविधियो मे गहरा संबंध पाया जाता है। मृदा की संरचना, बनावट एवं विकास मूल शैल, जलवायु, वनस्पति, भूमि का ढाल, समय अवधि आदि के द्वारा निर्धारित होती है। मिट्टी की उर्वरकता में उसके भौतिक एवं रासायनिक गुणो का योगदान होता है। जबकि उसके निर्माण में जलवायु एवं मनुष्य द्वारा की जाने वाली जुताई-निराई-गुडाई एवं साफ-सफाई आदि का योगदान होता है। किसी भी मृदा की उर्वरता का निर्धारण उसके भौतिक एवं रासायनिक गुणो पर निभ्र्ज्ञर करता है। क्योकि प्रत्येक फसल एवं वनस्पति विशेष प्रकार की मृदा में सुगमता से विकसित होती है, जैस-चावल के लिए चिकनी मिट्टी , गेहू के लिए दोमट मिट्टी , कपास के लिए काली मिट्टी अधिक उपयोगी होती है। समस्त शाकाहारी जीवो का भोजन मृदा में उपजने वाली वनस्पतियों पर निर्भर करता है। मांसाहारी जीव भी जिन प्राणियों को अपना भोजन बनाते है वह प्राणी भी वनस्पतियो को ही अपना भोजन बनाते है। इसलिए हम कह सकते है कि संपूर्ण शाकाहारी एवं मांसाहारी जीव अपना भोजन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से ही प्राप्त करते है। उत्तम कृषि के लिए उपजाऊ मिट्टी सर्व प्रमुख भैतिक तत्व है। सभी प्रकार के खाद्यान्न, तिलहन, तेल, कपास, रेसा, आदि सूती वस्त्र उद्योग, रेशम उद्योग, आटा पीसने, धान कूटने , दाल बनाने व जूट उद्योग आदि कृषि पर आधारित उद्योग है, जो मृदा की उत्पादकता से प्रभावित हुए बिना नही रह सकेत है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

जलाशयो का प्रभाव

मानव एवं वनस्पतियों सहित दुनियॉ के प्रतेक जीव के लिए जल परम आवश्यक है। जल पीने के साथ, साफ-सफाई, भोजन बनाने, फसलो की सिंचाई, नहाने, पशुओ को पानी पिलाने आदि के काम लिया जाता है। जिन क्षेत्रो में सागर , झील, तलाब, कुआ, बावडी आदि प्रमुख जल स्त्रोत पाये जाते है, प्राय: मानव का निवास उन्ही क्षेत्रो में देखने मे मिलता है। विश्व की अधिकांश सभ्यताये नदियो के किनारे ही बसने प्रमाण मिलते है। जैसे ह्वांग्हो, यांगटीसीक्यांग, मिकांग, इरावदी, मिसिसिपी, गंगा, सिंधु, ब्रम्हपुत्र आदि। मिश्र, सहारा मरूस्थल का अंग होते हुए भी उस के उत्तरी भाग में नील नदी से नहर निकाल कर आसपाल के क्षेत्रो में सिंचाई द्वारा विभिन्न प्रकार की फसले उगाई जाने लगी है। इसी तरह राजस्थान के उत्तरी भाग में इंदिरा गांधी नहर के आगमन के पश्चात यहां विभिन्न प्रकार की फसले उगाई जाने लगी है। अब यह क्षेत्र राजस्थान का ''अन्न का कटोरा''कहलाने लगा है।

आधुनिक युग में समुद्री यातायात के विकास से महासागर अवरोध के स्थान पर विभिन्न महाद्वीपो में पारस्परिक संबंध बनाने में सहायक साबित हो रहे है, क्योकि जल यातायात, स्थल एवं वायु यात्रा से सस्ता यातायात है। वर्तमान समय में अधिकांशत: अंतरराष्ट्रीय व्यापार में जल यातायात की प्रमुखता है। महासागरीय बाधाओ के कारण प्रशांत महासागर के दोनेा तटो पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों पूर्व में अमेरिकी संस्कृति एवं पश्चिम में चीन संस्कृति का विकास हुआ। विश्व की अधिकांश जनसंख्या नदियों के किनारे या समुद्र तटो के पास पाई जाती है, क्योकि उन्हे वहा मछली, भोज्य पदार्थ, नमक सीप, तेल, वनस्पति एवं औषधि सुगमता से मिल जाती है।

प्राकृतिक वनस्पति का प्रभाव

प्राचीन काल से वन प्रदेशो ने मानव के विकास में अवरोधक का कार्य किया और वर्तमान समय में भी भूमध्य रेखीय सघन वन प्रदेश वश्वि के सर्वाधिक पिछडे और अल्प जनसंख्या वाला प्रदेश है। मानव विकास और वन प्रदेशो को हम तीन भागो में बांटकर अध्ययन कर सकते है।

- **वनो द्वारा शासित व्यवस्था**-जहां मानव क्रियाएं बनो द्वारा नियंत्रित है जैसे-कांगो बेसिन, अमेजन बेसिन आदि
- **वनो पर हावी व्यवस्था**–जहां वनो को साफ करके भूमि का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है एशिया व मध्य अमेरिका के अधिकांश मैदानी भाग इसमें सम्मिलित है। किन्तु पर्वतीय एवं दुर्गम क्षेत्रो में वन सुरक्षित है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

- **वनो पर शासित व्यवस्था–**जहां वन मानव द्वारा नियंत्रित है, इसके अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका व उत्तरी पश्चिमी युरोप के विकसित देश सम्मिलित है।

मानव व्यवसाय पर प्राकृतिक वनस्पति का प्रभाव

- मानसूनी प्रदेशो के आर्द्र भागो में चौडी पत्ती वाले वृक्ष जैस- आम, नीम, पाीपल, बरगद, साल, सागौन, शीसम, जामुन आदि के वृक्ष पाए जाते है। जिनसे उपयोगी लकड़ी एवं फल प्राप्त होते है। मैदानी भागो में इन्हे साफ करके व्यवसाय के रूप में खेती की जाने लगी है।
- शुष्क एवं अर्ध शुष्क प्रदेशो में मरूदभिद छोटी पत्ती वाले वृक्ष एवं कटीली झाडियां पाई जाती है। इन प्रदेशो में पशुचारण ही मुख्य व्यवसाय है।
- उष्ण या सवाना घास प्रदेशो में कठोर एवं लंबी घासे उगती है , जो पशुओ के चारे के लिए उत्तम होती है। जबकि शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदानो में गाय, भैस, भेड, बकरी आदि दूध, मांस, ऊन, एवं चमड़े के लिए पाले जाते है। वर्तमान समय में शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदानो के बड़े भाग को काटकर आधुनिक कृषि यंत्रो से गेंहू , जौ, कपास, आदि की व्यवसायिक कृषि की जाने लगी है।
- भूमध्य रेखीय वर्षा वनो की लकड़ी कठोर एवं मजबूत होती है जिनका उपयोग रेल के स्लीपर , डिब्बे , लकड़ी के लट्ठे, भवन निर्माण आदि के लिए किया जाता है। इनका उपयोग औद्योगिक कार्यो में कम किया जाता है। वही शीतोष्ण कटिबंधीय वनो की लकड़िया कोमल होने के कारण कागज, लुग्दी, दिया सलाई के लिए औद्योगिक कच्चे माल के रूप में काम मे ली जाती है।
- शीत प्रधान टुण्ड्रा प्रदेशो में वर्फ के पिघलने पर शैवाल, लाइकेन जैसी अत्यंत छोटी वनस्पति एवं रंग-बिरंगे , फूल, दिखाई देने लगते है। यहां एस्किमो, चुक्ची, लैप आदि जनजातियां मछली एवं अन्य जीवो का शिकार कर अपना जीवन यापन करती है।

निष्कर्ष

विश्व के विभिन्न् भागो में जलवायु और वनस्पतियों में भिन्नता होने के कारण अलग-अलग प्रदेशो में अनेक प्रकार के जीव जन्तु एवं उपयोगी जानवर पाए जाते है। इस विभिन्नता का प्रभाव मानव समुदाय के आहार, विहार, वस्त्र, निवास, आर्थिक क्रिया, आवागमन के साधन तथा सभ्यता के विकास आदि पर देखा जा सकता है। मानव ने उपयोगी पशुओं के संरक्षण हेतु उन्हे पूजा में स्थान दिया जबकि कुछ को अशुध्द एवं कुछ जंगली मशुओ को आखेट द्वारा जीवन निर्वाह और आहार के रूप में काम लिया। सवाना तुल्य प्रदेशो एवं मानसूनी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

प्रदेशो में दूध के लिए गाय, भैस, बकरी आदि का पालन किया जाता है। भार ढोने के लिए खच्चर, गधे, जबकि मांसाहार के लिए सुअर और अंडो लिए मुर्गी पालन किया जाता है। मरूस्थली प्रदेशो में पशुपालन ही प्रमुख व्यवसाय है। साथ ही सवारी आदि के लिए ऊंट एवं घोड़ो को पालते है। टुण्ड्रा प्रदेशो में आदिम जनजातियां मांसाहार हेतु रेन्डियर, ध्रुवीय भालू, खरगोस , समुन्द्रीजीवो को अपने आहार के रूप में काम लेते है। जलीय जीवो में ह्वेल, सील, वालरस आदि मछलियों से मांस, चमड़ा एवं तेल प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार मानवीय जीवन के विकास में वहां के पर्यावरण , भौतिक संसाधन एवं माननीय छाट का प्रमुख योगदान रहता है।

संदर्भ गंथ सूची

[1]. चौहान टी.सी. (2004) : इंटीग्रटेड डेवलपमेंट इन इंडियन डेजर्ट, दिव्या पब्लिकेशन , जोधपुर।

[2]. शुक्ला एस.के. (2007) : प्रादेशिक भूगोल के सिध्दांत, मध्यप्रदेश हिंदी गंथ अकादमी, भोपाल।

[3]. नेगी, पी.एस. (2001) : पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भुगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

[4]. अतरचन्द, (2009) : एनवायरमेंट चैलेंज, यू.डी.एच पब्लिकेशन , नई दिल्ली

[5]. पवार, एम.एस. (2012) : एनवायरमेंट चेंज एण्ड सस्टेड डेवलपमेंट इन द न्यु मिलेनियम, वॉल्यूम-03, बुक इन एनवायरमेंटल इन नेट।

[6]. शर्मा, एच.एस. मिश्रा, आर.एन. (2013) : भौतिक भूगोल, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी चौड़ा रास्ता जयपुर, प्रथम संस्करण।

[7]. राव, बी.पी. (2015) : भारत एक भौगोलिक समीक्षा, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।